कक्षा-आठवीं

विषय- हिंदी

पुस्तक-ज्ञान सागर

पाठ -३ (कहानी)

पाठ का नाम- **अच्छे पडोसी के गुण**

लेखक- **गोपाल चतुर्वेदी**

3 अच्छे पड़ोसी के गुण

हमने जीवन में कई पड़ोस बदले हैं। पर इन सब परिस्थितियों के बीच एक शाश्वत सत्य कभी नहीं बदल पाया, हमारा पड़ोसी के प्रति दृष्टिकोण आज भी स्नेहमय, उदार और सहायतापूर्ण रहा है। हमें यकीन है कि हमारे पड़ोसी भी हमारे प्रति ऐसे ही नेक इरादे रखते हैं। हमारे एक पड़ोसी की पत्नी हमेशा बीमार रहती थी। हम उनके पति की शक्ल देखते और एक ही सवाल दागते, ''आज भाभीजी का क्या हाल है?'' यह वैसे ही होता जैसे किसी काने से कोई रोज **दरियाफ़्त** करे कि ''भैया, उस आँख में रोशनी आई क्या?'' पड़ोसी कुछ समय बाद हमें देखते ही झुँझलाते और खुद ही आश्वस्त करते, ''आपकी भाभी की सेहत सुधर रही है।''

हम घर जाकर अपनी श्रीमतीजी से इस महान नारी के जीवन की तारीफ़ करते नहीं **अघाते**, ''एक साल से बिस्तर पकड़े है। अच्छे-अच्छे टें बोल जाते हैं इतने दिनों में। पर यह तो लगता है कि भगवान के यहाँ से **अमरौती** खाकर आई है।''

ऐसा ही स्नेहमय व्यवहार हमारे पड़ोसी का भी था। हमें साधारण सरदी-जुकाम भी होता तो वे **चेताते**, ''अकसर आपका गला खराब रहता है। किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाइए। हमने कहीं पढ़ा था कि बार-बार की खाँसी कैंसर का प्रारंभिक लक्षण भी होती है।'' यह हमारा सौभाग्य है कि हमने और हमारे पड़ोसी ने एक-दूसरे के परिवारों की सेहत के लिए ऐसा ही सद्भाव का रवैया अपनाया। शायद यह इन्हीं पारंपरिक शुभकामनाओं का प्रभाव था कि हमारी 'भाभी' की **प्राण-चिरैया** चारपाई में अटकी रही और हमारी खाँसी आती-जाती तो रही, पर 'कैंसर' न बन पाई। एक-दूसरे के बारे में अच्छे विचार हमेशा सुखद परिणाम देते हैं।

जहाँ तक उदारता का प्रश्न है, अपने पड़ोसी के लिए हमारा दिल दरिया रहता है।

शब्दार्थ–**दरियाफ़्त**–पता लगाना, **अघाते**–थकते, **अमरौती**–अमर होने की कोई जड़ी-बूटी आदि, **चेताते**–सावधान करते/चेतावनी देते, **प्राण-चिरैया**–चिड़िया रूपी प्राण

पृष्ठ १२–शब्दार्थ

अच्छे पड़ोसी के गुण

शब्दार्थ

1. शाश्वत - जो हमेशा रहे
2. दृष्टिकोण - Outlook
3. उदार – Liberal
4. नेक - अच्छा
5. इरादा - उद्देश्य
6. शक्ल - चेहरा
7. दरियाफ़्त - पता लगाना
8. आश्वस्त - Relax
9. सेहत - सवास्थ्य
10. टैं बोल जाना – मर जाना
11. अमरौती - अमर होने की दवा
12. चेताना - सावधान करना
13. कैंसर - कर्कट रोग
14. प्रारंभिक - Preliminary
15. रवैया - व्यवहार
16. प्राण-चिरैया - आत्मा
17. सुखद - सुख देने वाला
18. परिणाम - फल
19. दरिया - नदी
20. ज़रा - थोड़ा
21. जरा - बुढ़ापा

पृष्ठ १२ का सारांश

लेखक और उनके पडोसी हरदम एक दूसरे का हाल चाल पूछते थे | पडोसी की भावी की तबियत हरदम ख़राब रहती थी और लेखक को सदा खाँसी के साथ सर्दी-जुकाम लगा रहता था | लेखक के अनुसार रोज पडोसी की तबियत पूछना उन्हें अच्छा नहीं लगता था | दोनों पड़ोसियों का हाब-भाव एक दूसरे के सामने तो अच्छा रहता था,लेकिन दोनों के बीच में शीत युद्ध(COLD WAR) चल रहा था |

पृष्ठ १२ पर आधारित कुछ प्रश्न

प्र -१ प्रबंध के लेखक का नाम लिखिए |

प्र -२ इरादा ,शक्ल ,दरियाफ्त – शब्दार्थ लिखिए |

प्र -३ प्राण-चिरैया चारपाई में अटकी रही–अर्थ लिखिए|

प्र -४ सौभाग्य,सद्भाव –किस प्रकार के शब्द हैं ?

प्र -५ प्रस्तुत अनुच्छेद से कुछ मुहावरे ढूढ़कर उनके अर्थ सहित वाक्य बनाइये |

जिन पुराने जूतों, प्लास्टिक के थैलों और टूटी शीशियों को हमने सालों-साल सँजोया, उन्हें पड़ोसी को दान करने में हमें ज़रा भी संकोच नहीं होता है। ऐसा नहीं है कि दिमाग टोका-टाकी नहीं करता है। अंदर से अपनी बेशकीमती जायदाद ख्वाहमख्वाह पड़ोसी पर लुटाने के विरोध में स्वर उभरता है। हम उसे समझाते हैं कि इतने सारे कबाड़ी इस माल को 'रिजेक्ट' कर चुके हैं, इसे कहीं तो ठिकाने लगाना है। फिर जी कड़ा कर उसे किस्त-दर-किस्त पड़ोसी की झाड़ी पार फेंक देते हैं। हमें ताज्जुब होता है कि वह हमसे उदारता के इस **कृत्य** के विरुद्ध बहस करता है। कहता है कि जाने कौन जंगली उसके घर में सड़ा-गला कूड़ा फेंक जाता है। यह हमारी सामाजिक उपलब्धि है कि हम एक-दूसरे का नाम लेकर बुरा-भला नहीं कहते हैं। बुरा-भला कहना होता है तो इशारे से कहते हैं। इसीलिए कहावत है कि समझदार को इशारा काफ़ी है। अपन स्वभाव से अहिंसक हैं। कौन झगड़े-झंझट में पड़े। हम जानबूझकर मूर्खता का अभिनय करते हैं और पड़ोसी के सामने कूड़ा फेंकने वाले को डटकर कोसते हैं। अगले दिन हम अपने दरवाज़े को कचरे के ढेर से सुशोभित पाते हैं। हम भी पड़ोसी से उस तीसरे गिरे हुए इनसान को हर प्रकार का संक्रामक रोग लगने की बददुआ देते हैं, ''अपनी तो एक ही तमन्ना है। यह कूड़े का संवाहक जल्दी-से-जल्दी कूड़े के ढेर में मिले।'' पड़ोसी गंभीरता से मुंडी हिलाकर हमसे हमदर्दी जताते हैं। कूड़े का यह आदान-प्रदान बिना रोक-टोक के चलता रहता है।

महिलाएँ भी पड़ोसी धर्म निभाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ती हैं। उनका सिलसिला चीनी और चाय की पत्ती से शुरू होता है और एक-दूसरे की साड़ी-शॉल पर आकर टूट जाता है। हमें एक दिन घर पर पड़ोसी की बेटी को एक बंडल लाते देखकर आश्चर्य हुआ। अपने और पड़ोसी के सड़क के संबंध हैं। उनमें घर में घुसना शामिल नहीं है। उसने चहकते हुए सूचित किया, ''आंटी, आंटी! मम्मी ने आपकी साड़ियाँ प्रेस करवाकर भेजी हैं। उन्होंने अपना **तूश** का शॉल वापस मँगाया है।'' अपन चकराए। हम पुरुष कचरा ढोने-फेंकने में लगे रहे और यहाँ साड़ी-गजरा आने-जाने लगा।

शॉल तो समझ में आता है, पर यह 'तूश' क्या बला है? हम अपनी जिज्ञासा प्रकट कर पाते कि पत्नी ने लड़की को शॉल खुद पहुँचाने के वादे के साथ विदा किया और **अंतर्धान** हो गईं। आईं तो उनके हाथ में एक मटमैला-सा गरम कपड़े का टुकड़ा था। उनके चेहरे पर **संत्रास** का भाव था और स्वर में परेशानी। पता लगा कि पड़ोसन से उधार लिए शॉल पर चटनी के कुछ दाग लग गए थे। हमें उसे ड्राई-क्लीन करवाने का ज़िम्मा दिया गया। चूँकि

शब्दार्थ—**कृत्य**—काम, **तूश**—पहाड़ी बकरे का ऊन, **अंतर्धान**—गायब हो जाना, **संत्रास**—अत्यंत भय

पृष्ठ १३ के शब्दार्थ

22. संकोच - लज्जा
23. जायदाद - संपत्ति
24. बेशकीमती – अत्यधिक मूल्यवान
25. कबाड़ी - Ragman
26. ताज्जुब - आश्चर्य
27. कृत्य - किया हुआ काम
28. बहस - Argument
29. सामाजिक - Social
30. उपलब्धि - Achievement
31. कहावत - Hearsay
32. अहिंसक - Non-violent
33. मूर्खता - बेवकूफ़ी
34. अभिनय - नाटक
35. कोसना - बुरा भला कहना
36. सुशोभित - सुंदर लगना
37. संक्रामक - Contagious
38. तमन्ना - इच्छा
39. संवाहक - Conductive
40. मुंडी - सिर
41. सिलसिला - क्रम
42. शामिल - Include
43. तूश - एक प्रकार का कीमती ऊन
44. बला - मुसीबत
45. जिज्ञासा - जानने की इच्छा / Curiosity

पृष्ठ १३ का सारांश

प्रस्तुत पृष्ठ में पड़ोसियों के हाव-भाव पर प्रकाश डाला गया है | एक दूसरे के प्रति बदले की भावना मन में रखते हुए जानबुझ कर कूड़ा –करकट का फेंकना एक दूसरे के बारे में बुरा भला कहना तथा इन सब का आरोप किसी तीसरे पर डालना ,खुद उसे बददुआ देना जैसी नकारात्मक मानवीय लक्षण को लेखक ने उजागर किया है | महिलाओं के तौर-तरीके तथा चीजों की अदला-बदली और लेंन-देन को लेकर भी पड़ोसियों के बीच आपस में खीट-पीट चलती रहती है |

पृष्ठ १३ पर आधारित कुछ संक्षिप्त प्रश्न

प्र १) लेखक ने अपने पड़ोस के यँहा क्या-क्या चींजे फेंकी ?

प्र २) लेखक जान बुझ कर मूर्खता का व्यवहार क्यों करते थे ?

प्र ३) तूश ,अन्तर्ध्यान- शब्दार्थ लिखिए |

प्र ४) अनुच्छेद में से दो विदेशी शब्द छाँट कर लिखिए|

प्र ५) चटनी किस पर गिर गई थी ?

वह कमबख़्त 'तूश' का था, उसकी सफ़ाई में डेढ़ सौ की चोट लगी। अपनी आज भी 'तूश' के बारे में सिर्फ़ इतनी जानकारी है कि वह गरम कपड़े का ऐसा टुकड़ा है जिसकी धुलाई तक में जेब कटती है, खरीदने में कौन जाने नाक-कान की नौबत आती हो। बहरहाल पड़ोसन को तूश पर दाग लगने का हादसा ज्ञात हो गया और उन्होंने तूश दागी करने के लिए हमारी पत्नी को दोषी ठहराया। उनके अनुसार यह जान-बूझकर किया गया अपराध था, जिसकी जड़ में जलन और स्पर्धा की भावना थी। उन्होंने आरोप लगाया कि उनकी शुद्ध महँगी चाय की पत्ती के बदले हमारे घर में चाय की पत्ती के नाम पर उसका चूरा उन्हें माँगने पर मिलता था। एक बार उन्होंने अव्वल दरजे के प्याज़ उधार दिए और सड़े पिलपिले वापस पाए। ऐसे तूश-प्रकरण के बाद हमारे घरों में शीत-युद्ध चल रहा है और महिलाओं में बातचीत बंद है।

पत्नी के रुख़ से हमारे पड़ोसी-प्रेम में कोई तब्दीली नहीं आई है। हम वक्त-ज़रूरत उनकी सहायता में तत्पर रहते हैं। हमें पता है कि 'केबल' टी.वी. नई पीढ़ी के लिए कितना नुकसानदेह है। इसका **दुष्प्रभाव** बच्चों की पढ़ाई पर तो पड़ता-ही-पड़ता है, उनकी नज़र भी इससे कमज़ोर होती है। लिहाज़ा हम मौका मिलते ही उनकी 'केबल' का तार काट देते हैं। उन्हें भी हमारी नई पीढ़ी का ख़्याल है। हमारा 'केबल' का तार भी अकसर धराशायी पाया जाता है। हम उनके मेहमानों का खर्च भी बचाते हैं। कई बार उनका पता पूछने वालों को हमने दूसरे मोहल्ले में दिशा-भ्रमित किया है। पर इस विषय में हमारे प्रति उनका सहयोग कुछ अनुचित किस्म का है। वे कई बार अजनबियों तक को हमारे घर भेज देते हैं। ऐसे सहयोग-सौहार्द के बिना पास-पड़ोस का जीवन दूभर होने का खतरा है। जब से सरकार ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध पचास वर्ष में सौवीं बार कमर कसी है, हम पड़ोसी के घर हर दीवाली-नए साल के मौके पर भेंट-मिठाई लाने वाले के सी.बी.आई. एजेंट होने की चेतावनी देना नहीं भूलते हैं। यह अपना दुर्भाग्य है कि हमें उस प्रकार भ्रष्ट करने तक भी कोई नहीं आता है।

हमें लगने लगा है कि व्यक्ति और देश के पड़ोसियों के व्यवहार में ख़ास अंतर नहीं है। आखिर देश की इकाई भी व्यक्तियों के समूह से ही बनती है। जैसे हमारे पड़ोसी हमारे प्रति प्रेम और सद्भावना रखते हैं वैसे ही हमारे पड़ोसी देश भी। शांति, अहिंसा और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का उसूल हर पड़ोसी देश संसार के सामने सार्वजनिक तौर पर अपनाता है। यह **दीगर** है कि कभी-कभार सीमा-क्षेत्र में आतंकवादी गोलीबारी कर लें। उसके जासूस शहरों में बमबारी की योजना बनाएँ। थोड़ी-बहुत आतिशबाज़ी तो होती रहनी चाहिए। यों भी, दूसरा कौन-सी दाल खाता है, जानने की इच्छा एक स्वाभाविक जिज्ञासा है। अपनी तो एक ही आकांक्षा है। हमें अपने पड़ोसी से इतना लगाव है, वह भी हमसे अपने व्यवहार में कुछ सुधार लाए। ताली एक हाथ से तो बजती नहीं है। दोनों हिल-मिलकर अमन-चैन से रहें।

—गोपाल चतुर्वेदी

शब्दार्थ—दुष्प्रभाव—बुरा असर, दीगर—अन्य (बात)

पृष्ठ १४ के शब्दार्थ

46. अंतर्धान - गायब हो जाना
47. संत्रास - अत्यंत डर का भाव
48. नौबत - बुरी स्थिति
49. हादसा - दुर्घटना
50. स्पर्धा - Competition
51. जलन - ईर्ष्या, डाह, द्वेष
52. अपराध - Crime
53. अव्वल - प्रथम
54. शीत-युद्ध - Cold war
55. तब्दीली - बदलाव
56. दुष्प्रभाव - बुरा प्रभाव
57. लिहाज़ा - इसलिए, अत:
58. पीढ़ी - Generation
59. अकसर - अधिकतर/ Often
60. धराशायी - ध्वंश होना
61. किस्म - प्रकार
62. दूभर - कठिन
63. कमर कसना - तैयार होना
64. सौहार्द - मेल-जोल
65. सद्भावना - in good spirit
66. आंतरिक - Internal
67. सार्वजनिक - Public
68. दीगर - अन्य
69. जासूस - Detective
70. आकांक्षा - इच्छा

पृष्ठ १४ का सारांश

कहानी के अंतिम पृष्ठ में लेखक ने महिलाओं के व्यवहार पर प्रकाश डाला है तथा विद्यार्थियों को यह सूचित करवाना चाहतें हैं कि किस प्रकार हर व्यक्ति आरोप और प्रत्यारोप के माध्यम से एक दूसरे को नुकसान पँहचाने में ख़ुशी प्राप्त करता है| स्वदेश समाज की तुलना पडोसी देश से करते हुए लेखक का मानना है कि सार्वजनिक रूप से हर देश एक दुसरे के प्रति प्रेम और सदभाव रखता है लेकिन पीठ पिछे एक दूसरे के अमन और चैन में हस्तक्षेप करके अराजकता फैलाने की कोशिश करता रहता है |

पृष्ठ १४ पर आधारित कुछ संक्षिप्त प्रश्न

प्र १ महिलाओं के बीच बात चित क्यों बंद हो गई|

प्र २ पृष्ठ १४ से चार संज्ञा शब्द छाँट कर लिखिए|

प्र ३ 'ताली एक हाथ से तो बजती नहीं'-तात्पर्य लिखिए |

प्र ४ दुष्प्रभाव, दीगर – शब्दार्थ लिखिए |

प्र ५ वचन बदलिए– पत्ती,जानकारी,इकाई,अजनबी |

पाठ में से अभ्यास के लिए कुछ प्रत्यय,उपसर्ग,विलोम तथा पर्यायवाची शब्द

प्रत्यय

1. अमरौती - अमर + औती
2. प्रारंभिक - प्रारंभ + इक
3. सुखद - सुख + द
4. सामाजिक - समाज + इक
5. उपलब्धि - उपलब्ध + इ
6. कोसना - कोस + ना
7. मूर्खता - मूर्ख + ता
8. तब्दीली - तब्दील + ई
9. आंतरिक - अंतर + इक

उपसर्ग

1. सुशोभित - सु + शोभित
2. संवाहक - सम् + वाहक
3. दुष्प्रभाव - दुः + प्रभाव
4. सद्भावना - सत् +भावना
5. अहिंसक - अ + हिंसक

पर्यायवाची शब्द

1. इरादा - उद्देश्य, लक्ष्य, मंशा
2. शक्ल - चेहरा, रूप, मुखड़ा
3. रवैया - व्यवहार, आचरण, बर्ताव
4. परिणाम - फल, नतीजा
5. दरिया - नदी, सरिता, तटिनी, निर्झरिणी
6. जायदाद - संपत्ति, धन, विरासत
7. तमन्ना - इच्छा, अभिलाषा, चाहत
8. संत्रास - अत्यंत भाव
9. नौबत - बुरी स्थिति
10. हादसा - दुर्घटना, त्रासदी, घटना
11. जलन - ईर्ष्या, डाह, द्वेष

विलोम शब्द

1. शाश्वत # क्षणिक
2. उदार # अनुदार
3. नेक # बुरा
4. प्रारंभिक # अंतिम
5. सुखद # दुखद
6. ज़रा # ज़्यादा
7. जरा # निर्जरा
8. संकोच # निसंकोच
9. सामाजिक # असामाजिक
10. अहिंसक # हिंसक
11. मूर्खता # चालाकी
12. कोसना # सराहना
13. अपराध # निरपराध
14. सद्भावना # दुर्भावना
15. आंतरिक # बाहरी
16. सार्वजनिक # व्यतक्तिगत

अभ्यास

पाठ में से

1. लेखक पड़ोसी के प्रति अपनी उदारता का परिचय किस प्रकार देते थे?
2. पड़ोसी की केबल का तार काटने को लेकर लेखक क्या तर्क देते हैं?
3. लेखक ने व्यक्ति और देश के पड़ोसियों की तुलना क्यों की है?
4. पाठ के आधार पर बताइए कि अकसर पड़ोसियों में किन बातों को लेकर बहस होती थी?
5. **पाठ के आधार पर नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। सही कथनों के आगे सही (✓) का निशान और गलत कथनों के आगे गलत (✗) का निशान लगाइए–**

- [ ] तूश के शॉल पर चटनी का दाग लगने से लेखक की पत्नी बहुत परेशान थी।
- [ ] लेखक का व्यवहार अपने पड़ोसियों के प्रति उदार था।
- [ ] लेखक को पड़ोसी की पत्नी के स्वास्थ्य की चिंता थी।
- [ ] पड़ोसियों के बीच चाय की पत्ती, प्याज, साड़ी आदि का लेन-देन होता था।
- [ ] लेखक कूड़ा फेंकने की अपनी गलती को पड़ोसी के सामने मान लेते थे।

बातचीत के लिए

1. तूश-प्रकरण को अपने शब्दों में बताइए।
2. महिलाओं के बीच पड़ोसी धर्म निभाने का सिलसिला समाप्त क्यों हो जाता है?
3. कोई ऐसी घटना बताइए जब आपके पड़ोसी ने अपना पड़ोसी धर्म निभाते हुए आपकी सहायता की हो।
4. क्या वास्तव में लेखक और उनके पड़ोसी का व्यवहार एक-दूसरे के प्रति उदार था? अपने विचार बताइए।

अनुमान और कल्पना

1. यदि लेखक और उनके पड़ोसी का व्यवहार एक-दूसरे के प्रति अच्छा होता, तो उनके जीवन में क्या परिवर्तन आता?
2. यदि लेखक और उनके पड़ोसी वास्तव में 'अच्छे पड़ोसी' होते, तो वे शीत युद्ध की समस्या से कैसे निपटते?

भाषा की बात

1. **नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–**
   (क) शाश्वत ..... (ख) दुखद ..... (ग) दुर्भाग्य .....
2. **नीचे दिए गए वाक्यों का भाव समझाइए–**
   (क) एक साल से बिस्तर पकड़े हैं।
   .....
   (ख) हमारी भाभी की प्राण-चिरैया चारपाई में अटकी रही।
   .....
   (ग) उसकी सफ़ाई में डेढ़-सौ की चोट लगी।
   .....

जीवन मूल्य

1. पड़ोसियों के बीच दैनिक प्रयोग की वस्तुओं का आदान-प्रदान होता रहता है। हमें इस आदान-प्रदान में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
2. निम्नलिखित स्थितियों में आप पड़ोसी के साथ कैसा व्यवहार करेंगे–
   (क) जब उनके परिवार में कोई अस्वस्थ हो।
   (ख) जब उनकी अनुपस्थिति में उनके घर कोई अतिथि आ जाए।

कुछ करने के लिए

अपने किन्हीं तीन पड़ोसियों के विषय में जानकारी देते हुए दिए गए बिंदुओं के आधार पर कॉपी तालिका बनाइए–

पड़ोसी का नाम	पड़ोसी के घर के सदस्य	पड़ोसी की कोई दो ख़ास आदतें, जो आपको पसंद हों	पड़ोसी की कोई दो ख़ास आदतें, जो आपको पसंद न हों
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

पाठ में से ....

1. लेखक अपने पड़ोसी के प्रति उदारता दिखाने हेतु सालों पुराने पड़े जूते, पलास्टिक की थैलियाँ, टूटी शीशियों को बिना किसी संकोच के पड़ोसियों की झाड़ी के पार या घर के पीछे फेंक देते हैं।

2. लेखक पड़ोसी के केबल का तार काटने को सही ठहराने के लिए दलीलें पेश करते हुए कहते हैं कि केबल में आने वाले कार्यक्रम बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालते हैं। बच्चे इन कार्यक्रमों को देखने के इतने आदी हो जाते हैं कि अपनी पढ़ाई तक का नुकसान कर लेते हैं, लगातार टी .वी. देखने से उनकी आँखें भी कमज़ोर हो जाती हैं।

3. लेखक ने व्यक्ति और देश के पड़ोसियों की तुलना की है क्योंकि जिस प्रकार एक व्यक्ति भला मानुष और हमारा शुभचिंतक होने का दिखावा करता है ठीक उसी प्रकार हमारे देश के पड़ोसी देश भी हमारे देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का वादा करते हैं लेकिन गुप्त रूप से हमारे देश में घुसपैठिए भेजकर असामाजिक गतिविधियों को अंजाम देकर खौफ़ और आतंक का माहौल पैदा करते हैं।

4. पड़ोसियों के बीच अधिकतर सामान्य बातों को लेकर बहस होती है, जैसे- कूड़े-कचरे का इधर-उधर फेंका जाना, पड़ोसी को दिए गए चीज़ों के बदले ख़राब चीज़ों का प्राप्त होना या ख़राब अवस्था में प्राप्त होना।

बातचीत के लिए

1. तूश एक प्रकार का कीमती ऊन होता है। इस पाठ में एक पड़ोसी दूसरे पड़ोसी से किसी पार्टी में जाने के लिए तूश का शॉल माँगता है। दुर्भाग्यवश उस शॉल में चटनी का दाग लग जाता है। जब इस बात की जानकारी शॉल के मालिक को चलती है तो वह यह मानता है कि ईर्ष्या और स्पर्धा के कारण उसने ऐसा जान बुझकर किया है जिसका कारण पुरानी चाय और प्याज़ की लेन-देन है।

2. महिलाओं के बीच पड़ोसी धर्म निभाने का सिलसिला छोटी-मोटी चीज़ों से शुरू होता है और इसी क्रम से किसी मामूली बात को लेकर दोनों में शीत युद्ध हो जाता है और दोनों पक्ष अपने को सही मानकर अपने स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए पड़ोसी धर्म की तिलांजलि दे देते हैं।

3. एक बार जब आधी रात को मेरी चाची को साँप ने काट लिया था तो मेरे पड़ोसी ने पड़ोसी धर्म निभाते हुए उन्हें अपनी कार में अस्पताल पहुँचाया था।

4. वास्तव में लेखक और उनके पड़ोसी के बीच का व्यवहार बिलकुल भी उदार नहीं था पर उदार होने का दोनों दिखावा करते थे। उन दोनों के बीच में ऐसा होने का कारण यह था कि अपने दृष्टिकोण से दोनों अपने आपको सही मानते थे और दूसरे को यह विश्वास दिलाने का भी प्रयत्न करते थे कि वे ही सही हैं।

अनुमान और कल्पना

1. यदि लेखक और उनके पड़ोसी का व्यवहार एक-दूसरे के प्रति अच्छा होता तो उनका जीवन खुशियों से भर जाता क्योंकि अच्छे पड़ोसी की तुलना देव से की गई है। हम मुश्किल घड़ी में भगवान को याद करते हैं परंतु पड़ोसी के अच्छे होने पर वे हमारी मुश्किल घड़ी में हमारा साथ देते और उनकी मुश्किल घड़ी में हम उनका साथ देते।
2. यदि लेखक और उनके पड़ोसी वास्तव में 'अच्छे पड़ोसी' होते, तो वे शीत-युद्ध की समस्या को पारस्परिक सूझ-बूझ और बात-चीत से सुलझा लेते।

भाषा की बात

1. क. शाश्वत # क्षणिक
   ख. दुखद # सुखद
   ग. दुर्भाग्य # सौभाग्य

2. क. एक साल से बीमार हैं।
   ख. लंबे समय से बीमारी के कारण बिस्तर में पड़े रहना।
   ग. सफ़ाई में डेढ़ सौ का खर्च होना।

जीवन मूल्य

1. पड़ोसियों के बीच दैनिक प्रयोग की वस्तुओं का आदान-प्रदान होना स्वाभाविक-सी बात होती है। हमें इस आदान-प्रदान में काफी सजग रहने की आवश्यकता है, जैसे- जिस स्थिति में चीज़ों को लेना चाहिए उसी स्थिति में चीज़ों को लौटाना चाहिए और खराब हो जाने की स्थिति में उसे ठीक करके या फिर नया देना चाहिए। जितने दिनों के लिए लिया है उतने दिनों में वापस कर देना चाहिए या देर होने पर पड़ोसी को सूचित कर देना चाहिए।

2. क. जब मेरे पड़ोसी के परिवार में कोई अस्वस्थ हो तो हम उनके साथ पूरी हमदर्दी रखते हुए उनकी आवश्यकताओं का ख्याल रखेंगे, उनसे मिलने अस्पताल जाएँगे और ज़रूरत पड़ने पर आर्थिक मदद भी करेंगे।

   ख. जब उनकी अनुपस्थिति में उनके घर कोई अतिथि आ जाए तो सच्चे पड़ोसी का धर्म निभाते हुए हम उनके अतिथि का आदर-सत्कार करेंगे और पड़ोसी के न आ जाने तक उनका पूरा-पूरा ध्यान रखेंगे।

धन्यवाद